अंगुत्तरनिकाय में समाजोत्थान की रूपरेखा

(एकक निपात के संदर्भ में)

(एम. फिल. बौद्ध अध्ययन की उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुति)

Anguttarnikaya mein Samajotthan ki Ruprekha

(Ekaka Nipaat ke Sandarbh mein)

(M. Phil. Bouddha Adhyayana ki Upadhi Hetu Laghu Shodh-Prabandha Prastuti)

शोधार्थी

प्रवीण आचरमन शंभरकर

एम. फिल. बौद्ध अध्ययन

पंजीयन क्र. : 2014/03/213/003

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

शोध-निर्देशक

डॉ. सुरजीत कुमार सिंह

प्रभारी निदेशक

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

(संस्कृति विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

सत्र 2014-15, नवंबर-2015

<u>घोषणा-पत्र</u>

मैं **प्रवीण आचरमन शंभरकर** घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा **"अंगुत्तरनिकाय में समाजोत्थान की रूपरेखा (एकक निपात के संदर्भ में)"** इस विषय पर **एम. फिल. बौद्ध अध्ययन**, तृतीय छमाही (सत्र : 2014-15) पाठ्यक्रम हेतु लघु शोध-प्रबंध एक महत्वपूर्ण और मौलिक कार्य है।

यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा, डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र, संस्कृति विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के मार्गदर्शन में किया गया है।

मेरी जानकारी के अनुसार मेरे द्वारा इस विषय पर किया गया शोध कार्य किसी भी अन्य विश्वविद्यालय में अब तक नहीं हुआ है।

स्थान : वर्धा

दिनांक : 23 नवंबर, 2015

शोधार्थी

प्रवीण आचरमन शंभरकर

एम. फिल. बौद्ध अध्ययन

डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र

संस्कृति विद्यापीठ

म. गां. अं. हिं वि. वि. वर्धा

डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

DR. BHADANT ANAND KAUSALYAYAN CENTRE FOR BUDDHIST STUDIES
MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA

डॉ. सुरजीत कुमार सिंह
प्रभारी निदेशक एवं सहायक प्रोफेसर
Dr. Surjeet Kumar Singh
Director-in-charge & Assistant Professor

दूरभाष/Tel: 07152/251728/09326055256
ईमेल/Email: surjeetdu@gmail.com
दिनाँक/Date:23-11-2015

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रवीण आचरमन शंभरकर** ने डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से **एम. फिल. बौद्ध अध्ययन** की उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध, **अंगुत्तरनिकाय में समाजोत्थान की रूपरेखा (एकक निपात के संदर्भ में)** प्रस्तुत किया है। यह शोध कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न हुआ, जो कि पूर्ण रूप से शोधार्थी का मौलिक कार्य है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार यह शोध-प्रबंध समग्र अथवा आंशिक रूप से किसी भी अन्य विश्वविद्यालय अथवा किसी भी अन्य उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके साथ ही किसी अन्य रूप में इसकी प्रस्तुति एवं प्रकाशन अन्यत्र नहीं हुआ है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. सुरजीत कुमार सिंह)

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्रमाण-पत्र	I
	घोषणा-पत्र	II
	आभार	IV
	भूमिका	1
1.	प्रथम अध्याय : अंगुत्तरनिकाय का बौद्ध परंपरा में महत्व	6
2.	द्वितीय अध्याय : एकक निपात में सामाजिक संदेश	23
3.	तृतीय अध्याय : मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग	53
	निष्कर्ष	122
	संदर्भ-ग्रन्थ सूची	126

<u>आभार</u>

तथागत गौतम बुद्ध और डॉ. बाबासाहब अंबेडकर, जिन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए अप्रमाद के साथ व्यतीत किया। जिनके अथक परिश्रम से समाज में न्याय और नीति प्रवाहित हो रहीं है। उन्हीं दो महामानवों की प्रेरणा से यह कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के अंतर्गत संस्कृति विद्यापीठ के डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र का ऋण सदैव ही रहेगा। जो यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा का कार्य चल रहा है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। एम. फिल. बौद्ध अध्ययन के लिए शोध कार्य पूर्ण करते हुये अत्यंत आनंद हो रहा है। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए हमारे विभाग के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह का उत्साहवर्धन और मार्गदर्शन महत्वपूर्ण रहा । हमारे विभाग के अन्य सहायक प्रोफेसर एवं कर्मचारी वर्ग का सहयोग मिला । एम. ए., एम. फिल., पीएच. डी. के सभी सहपाठियों की सहायता मिली। हमारे विभाग के डॉ. भदंत सावंगी मेधंकर पुस्तकालय का बड़ा सहयोग मिला और विश्वविद्यालय के राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय की भी बहुत अहम भूमिका इस शोध कार्य में रहीं जो वहाँ अध्ययन के लिए आवश्यक पुस्तकों और अन्य सुविधाओं की उपलब्धता रहीं। *MS-Office Word* की सहायता मिली।

मेरी माँ, पिताजी और बड़े भाई का बहुत ही आधार रहा, शोध कार्य के समय उनका स्नेह एवं प्रोत्साहन मिलता रहा, जिस कारण यह कार्य पूर्ण करना संभव हो पाया।

उपरोक्त उल्लेखित सभी का मेरे शोध कार्य में विशेष योगदान एवं सहयोग रहा इसलिए सभी का मनःपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। धन्यवाद! जय भीम!

आपका
प्रवीण आचरमन शंभरकर
एम. फिल. बौद्ध अध्ययन
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र
म. गां. अं. हिं. वि. वि. वर्धा.